KS -78 K-138 137

जे दीसे गुरू सिखड़ा तिस निव निव लागां पाये जीयो

(सत्संदेश मार्च-अप्रैल 1972 में प्रकाशित प्रवचन)

संसार सागर में सच्चा कौन है ? मानुष जन्म बड़े भागों से मिलता है। ये सच को पाने की जगह है। सच किसको कहते हैं ? ''नानक साचे को सच जाण।'' वह परमात्मा जो अटल और लाफ़ानी (अविनाशी) है, जो कभी गिरायेमान नहीं, सबका हरता, कर्त्ता और धरता है। उसको साचा कहते हैं। जो इज़हार (अभिव्यक्ति) में आया - ''एको अहम् बहुस्याम'', अर्थात् मैं एक से अनेक हो जाऊं, और, ''एको कवाओ तिसते होय लख दरियाओ।'' जो इज़हार में आया हे, उसको सच कहते हैं। कि हे प्रभु सच्चा कौन है ? मानुष जन्म पाकर जिसने तुमको जान लिया। वह सच कैसा है ? वह आदि सच है, जुगाद सच है, है भी सच है, होसी भी सच है। वह हमेशा रहने वाला है, Eternal है, Eternity (अमरत्व) से भी परे कुछ और है तो वह है। तो कहते हैं, मानुष जन्म पाकर सच्चा कौन है ? जिसने अपने आपको सच से जोड़ा है। सच कौन है ? जो साचा है, इज़हार में आया है। जो हमेशा है, अटल है, लाफ़ानी है। तो मानुष जन्म पाकर सच्चा वह है - मगर कहने को तो हम सब कहते हैं हम सच्चे हैं, हमने सच को पाया है। कहते हैं असल में सच्चा वह है, जो अन्तर और बाहर, दोनों तरफ से सच्चा है। अन्तर में भी सच के सामने हाज़र-नाज़र है। बाहर हरेक काम करते हुए भी उसका Way of living वह भी उसका जो है, वह (प्रभु के) भय में करता है। तो मानुष जन्म बड़े भागों से मिला है। इसका आदर्श है, सच को पाना। कौन सच ? जो सच था, इज़हार में आया है, जो अटल और लाफ़ानी है। और मानुष जन्म ही ऐसा समय है जिसमें हम उसको पाकर सच्चा कहला सकते हैं। आगे कुछ और भी कहा है, कि जिन्होंने सच को पहचाना है, कहते हैं उनके पांव और हाथ मैं चूमने को तैयार हूं। आदर्श तो है सच मगर जिसने पा लिया है उसके पांव और हाथ मैं चूमने को तैयार हूं। ऐसी हस्तियां दुनिया में आती रही हैं, आती हैं और आती रहेंगी, मगर आगे भी कमयाब (दुर्लभ) थीं अब भी कमयाब हैं। मानुष जन्म पाकर ऐसा पुरूष जिसने सच को अनुभव किया है बड़े भागों से मिलता है। ऐसी हस्ती को सत्गुरू कहते हैं। गुरू अमरदास जी साहब सत्तर बहत्तर साल तक इस

सच की तलाश में रहे। आखिर जब गुरू अंगद साहब के चरणों में आए हैं तो कुछ सच की झलक उनको मिली तो कहा :-

बिन भागां ऐसा सत्गुर न मिले।

कि बड़े ऊंचे भाग जागे - ''कर्म होय सत्गुरू मिलाय'' प्रभु खास कृपा करे तब किसी सत्स्वरूप का अनुभव होता है। अगर ऐसा, कहते हैं, मिल जाए, तो मैं उसके पांव और हाथ चूमन को तैयार हूं। शुक्राने की बात है। गुरू अर्जन साहब थे। उनके दरबार में रागी लोग कीर्तन करते थे। एक दिन उन्होंने कहा कि हमारी लड़की की शादी है, कुछ मिल जाए ताकि गुज़ारा हो जाए। कहने लगे, अच्छा दे देंगे। तो आखिर उन्होंने कहा, महाराज हम ज्यादा नहीं मांगते। फ़ी सिख एक टका दे दो। उन्होंने कहा, अच्छा, कल कर देंगे। फिर कहा कि तारीख आ गई है ज़रा जल्दी कर दो। कि अच्छा कल दे देंगे। दूसरे दिन आए - ये गुरू अर्जन साहब की बात है - साढ़े चार टके आगे रख दिये कि लो महाराज। कि महाराज संगत तो बड़ी बैठी है, ये क्या ? कहने लगे, पहला सिख गुरू नानक, दूसरा सिख अंगद साहब, तीसरा सीख गुरू अमरदास और चौथा सिख गुरू रामदास और आधा मैं - साढ़े चार हुए। आपको मालूम है सिख की क्या तारीफ है ?

गुरू सिख सिख गुरू है एको गुर उपदेश चलाए।

जो सिख बन जाता है वही गुरू बन जाता है। ''हरचे खिदमत कर्द ऊ मखदूम शुद।'' सेवक से स्वामी बन जाता है। बात समझे ? साढ़े चार टके दे दिये। खैर उन्होंने (रागियों ने) बड़ी निंदा की। कहने लगे यहां तक कि गुरू नानक साहब को कौन जानता था अगर हम न होते तो। सिख सब कुछ बर्दाश्त करता है, गुरू के खिलाफ कुछ भी बर्दाश्त नहीं करता। कहने लगे, अच्छा भई तुम जाओ। अब लोग माफी मंगवाने को आए। कहने लगे, जिस मुंह से निंदा की है, उस मुंह से जाए, तारीफ करे गुरू की। बात समझे ? इससे सबक सीखने की बात है। अपने आपको कहा मैं आधा सिख, हालांकि गुरू अर्जन साहब वही ज्योति थी। असल में ज्योति तो एक ही होती है। गुरू कभी मरता नहीं।

आदि अन्त एके अवतारा, सोई समझो गुरू हमारा।

गुरू नानक साहब से पूछा गया, तेरा गुरू कौन है ? तो फ़रमाने लगे, ''शब्द

गुरू, सुरति धुन चेला।'' वह परिपूर्ण परमात्मा जो है इज़हार में आया, वही मेरा गुरू है। कबीर साहब से पूछा गया, तेरा गुरू कौन है ? फ़रमाया, ''गुरू हमारा गगन में चेला है घट माहीं। सुरित शब्द मेला भया बिछुड़त कबहूं नाहिं।'' बात समझे हो, सिख किसको कहते हैं ? वह तो है परमात्मा, गुरू उनका। हमने उसको (परमात्मा को) देखा नहीं है ना ! जिसने सच को पाया, हम उसके पावं हाथ चूमने को तैयार हैं। बात यही है। गुरू और सिख दो नहीं। सिख बनने पर गुरू बनता है। पूर्ण सिख हो गया, गुरू बन गया। तो कहते हैं ऐसा पुरूष, जिसने सच को पाया है, वह मिल जाए तो मैं उसके पांव हाथ चूमने को तैयार हूं, बार-बार कुर्बान जाता हूं। जहां वह बैठते हैं वह ज़मीन तीर्थ स्थान बन जाता है। अब ये देखकर हमें अन्दाज़ा लगाना चाहिये कि सिख किसको कहते हैं ? गुरसिख किसको कहते हैं ? गुरू भी सिख है। हम सिख के सिख बनें। सिख तो गुरू बन गया, ''गुरू सिख, सिख गुरू है, एको गुर उपदेश चलाई।'' चीज़ वही चल रही है। जो Truth (सत्) है, एक ही है। एक बल्ब फ्यूज़ हो गया, दूसरा लग गया, दूसरा फ्यूज़ हो गया, तीसरा लग गया। उसको गाड पावर (प्रभु सत्ता) कहते हैं, उस को गुरु पावर कहते हैं, उसको क्राईस्ट पावर कहते हैं।

मैं अमेरिका गया था। 25 दिसम्बर को मैं वहीं था। उस दिन रात को मैंने एक टाक दी कि Christ lived before Jesus. (अर्थात् क्राईस्ट पावर इशु मसीह से भी पहले मौजूद थी)। आखिर मैंने कहा कि क्राईस्ट पावर, गाड पावर और गुरू पावर एक ही है। वह शब्द, वह परमात्मा। वह टाक छपी हुई मिलती है। तो आप समझे ? जब गुरू सिख बना, हम पहले गुरसिख ही हो सकते हैं ना ! तीन दर्जे हैं। एक सिख, गुरसिख, एक गुरमुख। जो गुरमुख बन गया, mouth-piece of Guru बन गया। और गुरू जो है, He is mouth-piece of God (वह परमात्मा का मुख है)। ''गुफ्ताये ऊ गुफ्ताये अल्लाह बवद, गरचे अज हलकूमे अब्दुल्लाह बवद।'' अर्थात् उनका कहा हुआ खुदा का कहा हुआ होता है चाहे ज़ाहिरा शक्ल में आवाज़ इंसानी गले से आती मालूम होती है। ''जैसे में आवे खसम की बाणी तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो'' और ''नानक दास बुलाया बोले।'' अब सवाल ये है कि गुरु तो सिख बना, हम गुरमिख कैसे बने ? इस की कुछ clear (स्पष्ट) हो जाए बात। पूछते रहते हैं ना, हम गुरसिख कैसे बनें ? गुरु का प्यारा कैसे बनें ? लायक लड़का कैसे बनें ? उस को दसम गुरु साहब ने खालसा करके कहा। ऐसे गुरसिख और गुरु में क्या फर्क हैं ? कहते है कोई फर्क नहीं।

खालसा मेरो रूप है खास। खालसा में हौ करूं निवास।
खालसा मेरो सज्जा सूरा। खालसा मेरो सत्गुर पूरा।

सज्जन किस को कहते हैं ? ''आदि, मध्य जो अन्त निबाहे नानक सो साजन मेरा मन चाहे।'' जो आदि में, अन्त में और बीच में हमें छोड़ कर न जाए उस का नाम है गुरू। और जो उन का सिख बने वह उस को छोड़ते नहीं। ''गुरू सिख-सिख गुरू है'' तो इसके बारे में — ये डायरियां जो रखवाई जाती हैं, ये गुरसिख बनने के लिये रखवाई जाती हैं। अभी गुरसिख नहीं बने। गुरमुख कब बनेंगे ? जब पिण्ड को छोड़ कर उपर आयेंगे, वहां गुरू के प्रत्यक्ष दर्शन हों, फिर वह बातचीत करे। फिर सच्चे मानों में सिख बनेंगे। जब उनका (गुरू का) मुख बन जाए तो गुरुमुख बन गये, वह, फिर कहते हैं, उसमें और मुझमें कोई फर्क नहीं। देखा आप को कौन-सा आदर्श await कर रहा है (प्रतीक्षा कर रहा है आपकी)। You have to become the Ambassadors of Truth. तुमको सच का सिपाही बनना है। कहां बैठे हो ? और कौन सच का Ambassador (दूत) बन सकता है ? उस के बारे में ये महापुरुष आप ही बयान करें तो ये ज़्यादा अच्छा है ना। मोटी बात हम समझते ही हैं। महापुरुषों की तालीम सब के लिए होती है, as a man problem (मानवीय समस्या के रूप में) होती है। ''मानस की जाति सब ऐकै पहचान बो।'' यह नहीं कि हिन्दू को और उपदेश है, सिख को और उपदेश है, मुसलमान को और उपदेश है। ये ज़रूर कहते हैं कि सिख बनो। मगर किस के सिख ? गुरसिख। हम किस के सिख है जी ? यह पूछना चाहिये। हम मन इन्द्रियों के सिख हैं, हम रूपये-पैसे जायदादों के सिख हैं, हम स्त्रियों के सिख है।

गुर मुरीद कोई साध है मन मुरीद संसार।

गुर मुरीद कोइ साधुजन होता है, जिस में वह प्रभु प्रगट होता है। बाकी सब हम लोग ? ज़न-मुरीद कहो। लफ्ज़ ज़रा सख्त हैं, मगर समझाने की बात है। दसम गुरू साहब का वक्त था। गुरू साहिबों का कायदा होता है, सब को शाबाश देते हैं। थोड़ा काम हुआ, शाबाश। एक सिख आया, कि शाबाश। तू बड़ा अच्छा गुरसिख है। इस में भी बड़ी भारी राज़ की बात है। कई बार अनुभवी पुरुष कहते हैं, तू बड़ा अच्छा सिख है, शाबाश। मगर उस को आभार देते हैं। नहीं है तो शर्म आए उस को। करने लग जाए (नहीं करता तो)। ख़ैर उस को तो यह कहा। जब वह चला

आया, तो उस की घरवाली कहने लगी, महाराज, यह आप का गुरसिख है ? यह तो मेरा गुरसिख है। आप कैसे कहते हैं हमारा गुरसिख है ? कहने लगे, नहीं, बड़ा अच्छा सिख है। कहने लगी, अच्छा आज़मा कर देख लो। उन्होंने (गुरू साहब ने) कहा, एक नया थान मलमल का ले आना। कि बहुत अच्छा महाराज, ले आऊंगा। खरीद कर ले आया बड़ा अच्छा थान रात को। रात बारह एक बजे, तो कहने लगी (घरवाली) ये थान तो मैंने लेना है। कहा, भई गुरू साहब को इकरार किया है। ये practically (वास्तव में) हो रहा है। सुबह देना है (थान) आ नहीं सकेगा इस वक्त। कल ला दूंगा। कहने लगी, यही थान लेना है। अब क्या करे ? दिन चढ़ा। जाना था दरबार में। गुरसिख भी गया। अब गुरसिख के माने so-called (तथाकथित) गुरसिख। गुरसिख हों तो हमें क्या करना चाहिये, आगे सब आएगा। चला गया बेचारा, क्या करे। पूछा, हां भई सिख, ले आया थान ? कहता है, हां मैं गया था, मिल नहीं सका। आज ले आऊंगा। गुरू से भी झूठ बोलता है। हमारे यहां भी जो आते हैं वह सामने झूठ बोलते हैं। वह समझते हैं यह जानता नहीं। कुछ पता ही नहीं इस को। जैसा कहा वैसा चल पड़ा। वह गुरू को चलाने आते हैं मुआफ करना। बनने नहीं आते गुरसिख। खैर, जब उन्होंने कहा, अच्छा, तो औरत वहां खड़ी थी। कहने लगी, महाराज, ये थान है वह। बताओ आप का सिख है या मेरा ? क्या हम ऐसा नहीं करते ? बहुत लोग ऐसा करते हैं। तो गुरसिख, जानना चाहिये किस को कहते हैं ? अब सुनिये गुरु अर्जन साहब की वाणी है। वह तारीफ करते हैं गुरसिख की, जिन्होंने कहा था मैं आधा सिख हूँ। वह आधे सिख थे तो हम कितने सिख हैं ? जो थोड़ा सा उपदेश करना सीख जाते हैं, गुरू बन जाते हैं मुआफ करना ! थोड़ी दो चार किताबें, तुकें याद कर ली, डो-डो कर के कभी हंस लिया कभी रुला दिया, गुरू बन गये। जा बच्चा कल्याण। खैर गुरू साहिबों की ज़बानी सुनो जो अपने आप को आदर्श कहते हैं। गौर से सुनो। और हमें क्या कहना चाहिये (अपने आपको) आगे आप समझ लो। जी।

जो दीसे गुर सिखड़ा तिस निव-निव लागां पाए जीयो ॥
आखां बिरथा जी की गुरू सज्जण दये मिलाय जीयो ॥

गुरू अर्जन साहब फरमाते हैं। उन का आदर्श आप ने देखा। सिख हुआ ना, सिखड़ा माने छोटा सिख, आधा सिख कहो। गुर सिखड़ा पंजाबी लफ्ज़ है, जिस के माने हैं छोटा सिख। यानी छोटा सा सिख भी कोई नज़र आ जाए तो कहते हैं मैं क्या

करूं ? कोई ऐसा नज़र आ जाए जो गुरू का थोड़ा सा सिख भी बना, कुछ precentage भी बने तो भी महात्मा बन जाता है। इस का मतलब है कम हैं, हज़ारों में कोई एक। इशारा आगे गुरू की तरफ है, अपनी तरफ। कहते हैं अगर ऐसा गुरसिख मिल जाए छोटा सिख, तो मैं क्या करूंगा ? ''आखां बिरथा जी की।'' कि महाराज, हम जन्म-जन्म के बिछुडे पड़े हैं प्रभु से, चक्कर काटते-काटते अब आए हैं। अपना जन्म वृथा गंवा रहे हैं, हमारी मदद करो। कहते हैं हम दुखी हैं मन इन्द्रियों के घाट पर। तीन किसम के दुख होते हैं, अधिभौतिक, अधिदैविक, अध्यात्मिक। कोई जिस्मानी (शारीरिक) दुखों से लाचार है, कोई मन-इन्द्रियों के दुखों से लाचार है, कोई अधिदैविक, आसमानी कोई मुसीबत आ जाए उससे। तो सारा जहान दुखी है। हम बड़े दुखी हैं, हम कैसे सुखी हो सकते हैं, कैसे हम को चैन आ सकता है ? उनका सवाल हुआ। गुरू का काम ही है, सुख का देने वाला। तो कहते हैं, ऐसा कोई नज़र आ जाए - इस का मतलब है कमयाब (दुर्लभ) हैं - हैं, कमयाब हैं।

एक दफ़ा का वाकेया (घटना) है, लाहौर से संगत जा रही थी अमृतसर, गुरू दर्शन करने को। गुरू अर्जन साहब थे (वहां)। गुरमता पास हुआ, ये फैसला हुआ कि कल वहां ठहरेंगे, परसों अमृतसर पहुंचेंगे। आगे दस-बारह मील सफर करते थे। गुरमता पास हो गया। एक बच्चा उठ कर कहने लगा क्या हम कल नहीं पहुंच सकते ? बच्चे का दिल है, साफ भी होता है, ज़्यादा काम की कशिश होती है उस में। सब ने कहा बच्चा कह रहा है, कल ही पहुंचो। दूसरे दिन डबल मार्च हुई, आगे पैदल चलते थे, जा पहुंचे ग्यारह-बारह बजे रात को। अब गुरू अर्जन साहब सर्दी का मौसम था, कम्बल लपेटा हुआ, कड़ाह प्रशाद का कड़ाहा सिर पर रख कर, स्टेशन पर, जहां पिपली साहब का गुरुद्वारा है ना, वहां जा कर मिल गये (संगत को)। धूम (बुक्कल) मारी हुई थी ना (कंबल की) ताकि कोई पहचाने नहीं। कहने लगे खालसा जी, मेरी एक अरदास गुरू के आगे करो, मुझे सिखी दान दें, मुझे गरीबी दान दें। ये प्रशाद मेरी तरफ से बांट दो। सब के पांव पड़े। उन्होंने अरदास की। अब आदमी का जिस्म charged होता है। जैसे ख्यालात वैसा charged होता है, radiation होती है ना (हरेक शरीर से किरणें प्रसारित होती है) हरेक इंसान से। छह-छह इंच होती है मामूली से मामूली इंसान से भी। जितना stronger (आत्मा कर के बलवान) हो उतना ज्यादा होती है। जो थोड़ा बहुत भजन करने वाले होते हैं उन को कुछ, अच्छा

आया, तो उस की घरवाली कहने लगी, महाराज, यह आप का गुरसिख है ? यह तो मेरा गुरसिख है। आप कैसे कहते हैं हमारा गुरसिख है ? कहने लगे, नहीं, बड़ा अच्छा सिख है। कहने लगी, अच्छा आज़मा कर देख लो। उन्होंने (गुरू साहब ने) कहा, एक नया थान मलमल का ले आना। कि बहुत अच्छा महाराज, ले आऊंगा। खरीद कर ले आया बड़ा अच्छा थान रात को। रात बारह एक बजे, तो कहने लगी (घरवाली) ये थान तो मैंने लेना है। कहा, भई गुरू साहब को इकरार किया है। ये practically (वास्तव में) हो रहा है। सुबह देना है (थान) आ नहीं सकेगा इस वक्त। कल ला दूंगा। कहने लगी, यही थान लेना है। अब क्या करे ? दिन चढ़ा। जाना था दरबार में। गुरसिख भी गया। अब गुरसिख के माने so-called (तथाकथित) गुरसिख। गुरसिख हों तो हमें क्या करना चाहिये, आगे सब आएगा। चला गया बेचारा, क्या करे। पूछा, हां भई सिख, ले आया थान ? कहता है, हां मैं गया था, मिल नहीं सका। आज ले आऊंगा। गुरू से भी झूठ बोलता है। हमारे यहां भी जो आते हैं वह सामने झूठ बोलते हैं। वह समझते हैं यह जानता नहीं। कुछ पता ही नहीं इस को। जैसा कहा वैसा चल पड़ा। वह गुरू को चलाने आते हैं मुआफ करना। बनने नहीं आते गुरसिख। खैर, जब उन्होंने कहा, अच्छा, तो औरत वहां खड़ी थी। कहने लगी, महाराज, ये थान है वह। बताओ आप का सिख है या मेरा ? क्या हम ऐसा नहीं करते ? बहुत लोग ऐसा करते हैं। तो गुरसिख, जानना चाहिये किस को कहते हैं ? अब सुनिये गुरु अर्जन साहब की वाणी है। वह तारीफ करते हैं गुरसिख की, जिन्होंने कहा था मैं आधा सिख हूँ। वह आधे सिख थे तो हम कितने सिख हैं ? जो थोड़ा सा उपदेश करना सीख जाते हैं, गुरू बन जाते हैं मुआफ करना ! थोड़ी दो चार किताबें, तुकें याद कर ली, डो-डो कर के कभी हंस लिया कभी रुला दिया, गुरू बन गये। जा बच्चा कल्याण। खैर गुरू साहिबों की ज़बानी सुनो जो अपने आप को आदर्श कहते हैं। गौर से सुनो। और हमें क्या कहना चाहिये (अपने आपको) आगे आप समझ लो। जी।

जो दीसे गुर सिखड़ा तिस निव-निव लागां पाए जीयो ॥
आखां बिरथा जी की गुरू सज्जण दये मिलाय जीयो ॥

गुरू अर्जन साहब फरमाते हैं। उन का आदर्श आप ने देखा। सिख हुआ ना, सिखड़ा माने छोटा सिख, आधा सिख कहो। गुर सिखड़ा पंजाबी लफ्ज़ है, जिस के माने हैं छोटा सिख। यानी छोटा सा सिख भी कोई नज़र आ जाए तो कहते हैं मैं क्या

करूं ? कोई ऐसा नज़र आ जाए जो गुरू का थोड़ा सा सिख भी बना, कुछ precentage भी बने तो भी महात्मा बन जाता है। इस का मतलब है कम हैं, हज़ारों में कोई एक। इशारा आगे गुरू की तरफ है, अपनी तरफ। कहते हैं अगर ऐसा गुरसिख मिल जाए छोटा सिख, तो मैं क्या करूंगा ? ''आखां बिरथा जी की।'' कि महाराज, हम जन्म-जन्म के बिछुडे पड़े हैं प्रभु से, चक्कर काटते-काटते अब आए हैं। अपना जन्म वृथा गंवा रहे हैं, हमारी मदद करो। कहते हैं हम दुखी हैं मन इन्द्रियों के घाट पर। तीन किसम के दुख होते हैं, अधिभौतिक, अधिदैविक, अध्यात्मिक। कोई जिस्मानी (शारीरिक) दुखों से लाचार है, कोई मन-इन्द्रियों के दुखों से लाचार है, कोई अधिदैविक, आसमानी कोई मुसीबत आ जाए उससे। तो सारा जहान दुखी है। हम बड़े दुखी हैं, हम कैसे सुखी हो सकते हैं, कैसे हम को चैन आ सकता है ? उनका सवाल हुआ। गुरू का काम ही है, सुख का देने वाला। तो कहते हैं, ऐसा कोई नज़र आ जाए - इस का मतलब है कमयाब (दुर्लभ) हैं - हैं, कमयाब हैं।

एक दफ़ा का वाकेया (घटना) है, लाहौर से संगत जा रही थी अमृतसर, गुरू दर्शन करने को। गुरू अर्जन साहब थे (वहां)। गुरमता पास हुआ, ये फैसला हुआ कि कल वहां ठहरेंगे, परसों अमृतसर पहुंचेंगे। आगे दस-बारह मील सफर करते थे। गुरमता पास हो गया। एक बच्चा उठ कर कहने लगा क्या हम कल नहीं पहुंच सकते ? बच्चे का दिल है, साफ भी होता है, ज़्यादा काम की कशिश होती है उस में। सब ने कहा बच्चा कह रहा है, कल ही पहुंचो। दूसरे दिन डबल मार्च हुई, आगे पैदल चलते थे, जा पहुंचे ग्यारह-बारह बजे रात को। अब गुरू अर्जन साहब सर्दी का मौसम था, कम्बल लपेटा हुआ, कड़ाह प्रशाद का कड़ाहा सिर पर रख कर, स्टेशन पर, जहां पिपली साहब का गुरुद्वारा है ना, वहां जा कर मिल गये (संगत को)। धूम (बुक्कल) मारी हुई थी ना (कंबल की) ताकि कोई पहचाने नहीं। कहने लगे खालसा जी, मेरी एक अरदास गुरू के आगे करो, मुझे सिखी दान दें, मुझे गरीबी दान दें। ये प्रशाद मेरी तरफ से बांट दो। सब के पांव पड़े। उन्होंने अरदास की। अब आदमी का जिस्म charged होता है। जैसे ख्यालात वैसा charged होता है, radiation होती है ना (हरेक शरीर से किरणें प्रसारित होती है) हरेक इंसान से। छह-छह इंच होती है मामूली से मामूली इंसान से भी। जितना stronger (आत्मा कर के बलवान) हो उतना ज्यादा होती है। जो थोड़ा बहुत भजन करने वाले होते हैं उन को कुछ, अच्छा

आदमी मालूम होता है। झरनाहट होती है ना, charging खैर उन्होंने प्रशाद बांटा। अरदास हो गई, कि मांग क्या मांगता है ? ये कहें, मुझे सिखी दान मिले, मुझे गरीबी दान मिले, स्वासों तक मिले। अब आते हुए (अमृतसर) वह पिछले रस्ते से आगे आ कर बैठे गये (दरबार में) जिम्मेदारी थी ना। जब संगत पहुंची (दरबार में) लोग कहें, ये वही है जो रात को थे। Radiation होती है। ये है आधे सिख का हाल। पूरे सिख का क्या होगा।

कहते हैं ऐसा पुरुष कोई मिल जाए तो मैं उस को अपनी बिरथा (व्यथा) बताऊंगा। और वाकई सब दुखी हैं। कोई मन-इन्द्रियों के घाट से दुखी है। कोई रूपये-पैसे-जायदादों से दुखी हैं, कोई मान-बड़ाई कर के दुखी हो रहे हैं। कोई, जैसे बच्चे ने कहा था, वह सब से ऊपर है, गुरू पीछे दुनिया आगे, world first and God next (दुनिया पहले प्रभु पीछे)। असल में चाहिये क्या ? God first and world next. (परमात्मा पहले दुनिया पीछे) तब तो हो ना। हम तकड़ियों से तोलते हैं। जिस को गुरू भारा हो गया उस का तो हो गया बेड़ा पार। जिस को दुनिया भारी है, वह दुनिया में रहेगा। तो कहते हैं अगर ऐसा गुरसिख कोई मिल जाए, आगे तारीफ़ भी करेंगे गुरुसिख कौन होता हैं ? कहते हैं छोटे-से-छोटे सिख भी मिले तो उसे अपनी बिरथा (व्यथा) कहेंगे कि महाराज, हम बड़े दुखी हैं। दुख को खोल कर बयान भी करेंगे, क्या हमें दुख है ? किन को उपदेश है ? हम लोगों को समझाने के लिये है। वह तो सिख बना, आधा सिख था ना। पर उस की ये अवस्था है तो हम को (हमारी अवस्था को) क्या कहना चाहिए ? वह गुरसिख है, हम सारे ही मन-इन्द्रियों के घाट के सिख हैं। हम मन सिख हैं, गुरसिख नहीं। अगर गुरसिख बनें तो गुरू का कहना ना मानें ? If ye love me keep my commandments (अगर मुझ से प्यार करते हो तो मेरा कहना मानो) हम कोई कहना मानते हैं ? वह कहता है भई ज़िन्दगी चन्द रोज (चार दिन की) है, भागों से मिली है। इसी में (आवागमन में) चक्कर काटते-काटते समय मिला है (मानुष जन्म का) भागों से। ''पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे ऐहला जन्म गंवाया।'' एक बार मानुष जन्म की पौड़ी हाथ से निकल गयी फिर या नसीब कब मानुष देह मिले और तुम प्रभु को पा सको।

मानुष देह मिली वडभागी। नाम न जपे सो आत्मघाती॥

जो परिपूर्ण परमात्मा से, नाम से, नहीं जुड़ते - नाम किस को कहते हैं ?

''नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।'' वह अनाम है, जब इज़हार में (अभिव्यक्ति में) आया, उस को नाम कहते हैं। ''नामे ही ते सब जग होवा।'' ये सारा उसी का रूप है। ''एहविस संसार जो तूं वेखदा हर का रूप है हर रूप नदरी आया।'' तो नाम को साथ रखो। वह महाचेतन है प्रभु और हमारी आत्मा चेतन है। हम ने मानुष जन्म पा कर महाचेतन के साथ लग कर और चेतन होना है। हम जड़ पदार्थों के साथ लग गये। नतीजा क्या है कि हमारी आत्मा चेतन, जड़ता के असर को पा रही है। जब चेतनता कम हो गयी तो मर कर कहां जायेंगे ? जिस level (दर्जे) में वह चेतनता हम में होगी। बात समझे हो ? बड़े भागों से मानुष जन्म हम को मिला है। उस को (गुरसिख को) बिरथा (व्यथा) बताओ, महाराज क्या हमारी गति है। इसमें (मानुष जन्म में) हम ने Bread of life (ज़िन्दगी की रोटी) को पाना था। जिस्म की खुराक खाना-पीना था, बुद्धि की खुराक थी, पढ़ना-लिखना-विचारना, सत-असत का निर्णय करना था, विवेक discrimination करनी थी, फिर सच को पाना था। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, अगर ऐसा कोई छोटे से छोटा सिख मिल जाए, तो कहते हैं, मैं उस को अपनी बिरथा (व्यथा) बताऊँगा। उस का ईलाज है भई। सारे रोगों का वाहिद (एक मात्र) ईलाज क्या है ?

सरब रोग को औखद नाम ॥

सारे दुखों का एक ही ईलाज है—नाम। ख्वाह अधिभौतिक दुख हों, अधिवैदिक हों, कोई हों। ये आत्मा की खुराक है Bread of life, Water of life (जीवनाधार), हम क्यों कमज़ोर हैं ? हमारी आत्मा कमज़ोर है, क्योंकि आत्मा को कोई खुराक नहीं मिली। अभी जो ये बातें कर रहे हैं, ये आत्मा का ज़िक्र है, ज़िक्र (चर्चा है मात्र), खुराक नहीं। जैसे रोटी कहो तो रोटी लफ्ज़— Bread कहो, डबल रोटी, loaf of bread, कुछ कहो— ये उस रोटी की तारीफ हो रही है कि रोटी क्या है ? रोटी के खाने से पेट भरेगा, बातों के पकवान से पेट नहीं भरेगा। पानी कहो, जल कहो, आब कहो, नीर कहो, वाटर कहो, एकवा कहो, ये उस पानी के नाम हैं मुखतलिफ़ ज़बानों में। इसकी direction (संकेत) थोड़ी मिलती है कि कोई और चीज़ है जिस के पीने से प्यास बुझती है। तो ऐसे पुरुषों के पास Bread of life और Water of life मिलता है। आलिम (विद्वान) तुम को इल्म देगा, अमीर आदमी तुमको रूपया देगा, कपड़े वाले तुम को कपड़ा देंगे, मगर आत्मा की खुराक उन के (महापुरुषों के) सिवा और किसी के पास नहीं। और वह खुराक आती कहां से है ?

क्राईस्ट ने कहा—I am the Bread of life. This Bread has come down from Heaven. Whosoever shall partake of it shall have everlasting life. कि मैं ज़िन्दगी की रोटी हूँ। ये रोटी आसमानों से आती है। जो कोई इस को खाएगा वह हमेशा की ज़िन्दगी को पा जाएगा।

ये सच की दौलत है, ये सच्चे पातशाह से मिलती है, दुनिया के लोगों से नहीं मिलती। गुरू अर्जन साहब थे और बादशाह था। बाहर tour (दौरे) पर गये। उन का भी कैम्प लगा था, बादशाह का भी कैम्प लगा था। एक गुरसिख, घास काटने वाला था। उस ने सुना कि मेरे गुरू आए हैं। उस ने घास काट ली बहुत सारी, सिर पर उठा ली। कैम्प लगे हुए देखे। अब सिख को अपने गुरू का ही कैम्प सब से आला मालूम होता है। जो बहुत अच्छा (कैम्प) बादशाह का था, देखा, तो नज़र उधर कर ली। आँखें मीच कर अरदास करता जाता है, हे महाराज, मुझ पर दया करो। मैं इन्द्रियों के घाट पर भूला पड़ा हूँ। अंधे कुएं में डूबा पड़ा हूँ। मुझ को निकालो। ये अरदास करते-करते, चलते-चलते बादशाह के कैम्प के नज़दीक आए। बाहर खड़ा था सिपाही। कहने लगा, किधर जाते हो ? कहने लगा, मैं अपने गुरू साहब के पास, महाराज के पास जाता हूं। वह रोके, वह रुके नहीं। कशमकश हुई। वह आँखें मीचे हुए जा रहा है, मस्ती में जा रहा है। सिख को गुरू की याद जब आए तो वह भी मस्ती में जाता है। तो आखिर बादशाह ने सुना। क्या बात है भई ? कहने लगे, ये कहता है, मैं गुरू महाराज के पास जाता हूँ, सच्चा पातशाह मेरा जो है। कहने लगा (बादशाह) वाकई, इस को कह, सच्चा पातशाह तेरा उस कैम्प में है। सच्चा पातशाह जिसके पास सच की दौलत है, जो सच की दौलत दे सकता है, उसी का नाम सच्चा पातशाह है, बाकी सब बादशाह दुनिया के झूठे बादशाह हैं। मैं ये सिर्फ अर्ज़ कर रहा हूँ कि गुरसिख के अन्दर कैसी चाहत है ? जा कर पहले तो बादशाह ने कहा उस को अन्दर आने दो। उस ने जा कर कहा (बादशाह से) महाराज, मैं बड़ा दुखी, मन-इन्द्रियों के घाट पर घिरा पड़ा हूं। आप दया करो। कहने लगा (बादशाह) भई तेरा सच्चा बादशाह मैं नहीं।

तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब, ऐसा पुरुष अगर मिले, उस के पास वाहिद (एक मात्र) ईलाज है हरेक दुख का। हमारे वह दुख क्यों नहीं दूर होते ? कई लोग जाते हैं, ये शिकायत करते हैं, महाराज, मेरे बच्चे, मेरे ये, मेरे वो, मेरा वो। उस से आत्मा को खुराक मिल जाती है, आत्मा बलवान हो जाती है। आत्मा बलवान हो

जाए तो—कहीं मार पड़ रही हो। पांच सात आदमी हों। डंडे पर डंडा पड़ रहा हो, जो मज़बूत आदमी हो उसको तो कोई परवाह नहीं। एक कमज़ोर आदमी है। उसको एक डंडा पड़ जाता है, वह कहता है हाय मर गया, हाय मर गया। दूसरा कहता है यार पड़ी तो बहुत है, मगर असर एक नहीं हुआ। जिसकी आत्मा बलवान है, आत्मा को खुराक मिली है, उसको दुख भी आता है, सुख भी आता है। उसके मरते भी हैं पैदा भी होते हैं। कर्मों के अनुसार है ना लेना-देना। वह परेशान नहीं होता। कहते हैं, इसकी सारी चीज़ों का ईलाज़ गुरु के पास है। जो छोटे से छोटा सिख मिले उससे यही माँगो। हम क्या मांगते हैं उससे ? बादशाह से जाकर रुपया मांगते हैं, जायदादें मांगते हैं। फलाना राज़ी रहे। कोई ऋद्धि-सिद्धि मांगते हैं, कई बीमारियों का ईलाज मांगते हैं, कई इस दुनिया के सुख, कई अगली दुनिया के सुख माँगते हैं। अरे उसके पास जो दौलत है उससे लो। बादशाह के पास जाकर कौड़ियां मांगना क्या बात है ? उसके पास चीज़ें तो सब हैं, जो उसके पास तुम चाहो-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों चीज़ें हैं। जो उसके पास जाओ असल चीज माँगों जो वह देने आता है। वह क्या देने आता है ?

जीया दान दे भक्ति लायन हर स्यों लैण मिलाय ॥

वह अपनी ज़िन्दगी का दान देने आता है। वह रोटी है प्रभु की, जो लोगों को अपनी रोटी देता है, अपना हिस्सा। दुनिया में सारे लोग मिलेंगे, कोई तुमको रुपया देगा, कपड़ा देगा, कोई जायदादें देगा, मन - बड़ाई देगा। मगर अपनी जान कोई नहीं देगा। उसकी जान क्या है ? सच - He is the Word made flesh and dwelt amongst us. वह शब्द मुजस्सम (सदेह) है जो हमारे दरम्यान आकर रहता है और वह देने आता है। लेने वाला कोई नहीं। हमारे हजूर (श्री हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज) फरमाया करते थे, वह (सत्गुरु) बांटकर देने को फिरता है रात को, मगर दुनिया—जिनके नैत्र निंद-रावते-जिनकी आँखों में नींद भरी है उनको क्या पता किस भाव कस्तूरी बिक गई। बात समझे हो ? ऐसे पुरुषों के पास जाकर लोग-आम लोग महात्मा के पास किस लिये आते हैं ? मैं यह अर्ज़ करता हूं ये है आश्रम। इसके चार कोने हैं, एक, दो, तीन, चार। एक पर रुपया रख दिया जाए, जो मांगे लो। एक जगह बीमारियों का ईलाज रख दिया जाए। एक जगह ऋद्धियों-सिद्धियों का ढेर लगा दिया जाए। सारी दुनिया इसी में खत्म हो जाएगी, नाम के लिए कौन आएगा ? हम प्रभु को याद भी करते हैं, सच्चे मानों में अपने सुख

के पाने के लिए। तो कहते हैं ऐसा पुरुष अगर हमें मिल जाए तो क्या करें ? बड़े भागों से मिलता है। उसको जिया की अपनी बिरथा (व्यथा) कहो कि महाराज हम बड़े दुखी हैं और वाकई हम दुखी हैं। जी।

सोई दस्स उपदेसड़ा मेरा मन अनत न काहू जाए जियो ॥

हमारी आत्मा मन के साथ लगकर जीव बन रही है। आगे मन, इन्द्रियों के हाथ बिक रहा है। कभी एक इन्द्री खींच कर ले जाती है, कभी दूसरी ले जाती है, कभी तीसरी ले जाती है। कहते हैं, मेरा मन दुखी है। कोई ऐसा उपदेश दो, ''सोई दस्स उपदेसड़ा मेरा मन अनत न काहू जाए जियो।'' ये मन खिंचा फिरता है, ये कहीं जाने का न रहे। इसको ऐसी बूटी सुंघा दो जिससे ये, जाने के काबिल न रहे। ऐसा महारस दे दो जिसको पा कर दुनिया के रस, इन्द्रियों के घाट के रस, फीके पड़ जाएं। ''बिखे बन फीका त्याग री सखिये नाम महारस पियो।'' विषय-विकारों का जो सुख है वह फीका है। नाम में महारस है। उसको पा ले तो यह तृप्त हो जाए। जैसे आग में लकड़ी डालो, तेल डालो, वह भड़कती है ना। आग पर पानी डालो तो वो बैठ जाती है। तो, ''नाम मिले मन तृप्तिये विशा नावे धृग जीवास।'' नाम के मिलने से मन तृप्त हो सकता है। नाम में महारस है। ये महारस कहां से मिलता है ? कैसे मिलता है ? ''मान महत सकत नहीं काही साधां दासी थीयो।'' मान से, बड़ाई से, बाजू बल से, रुपये के बल से या और किसी बल से वह महारस नहीं मिलता। कहते हैं कैसे मिलता है फिर ? कि साधु का दास बनो। साधु कौन है ? ''साध प्रभु भिन्न भेद न भाई।'' जो उसमें (प्रभु) फना (लय) हो गया, फ़नाफिल्लाह (प्रभु में अभेद) हो गया, उसका नाम साधु है। He is the mouth-piece of God (वह प्रभु का मुख है, प्रभु उसके मुख से बोलता है)। बात समझे हो ? हमने पाना है प्रभु को। जो उस सज्जन (प्रभु) से मिला दे। वह कैसा सज्जन है ? ''आद मध जो अन्त निबाहे, सो साजन मेरा मन चाहे।'' जो आदि में, दरम्यान में और आखिर में भी हमें छोड़ कर न जाए। वह है कौन ?

जिनां मिलंदेयां साडी दुरमत वंझे मित्र असाडरे सेई ॥

कि सारे जगत को ढूँढा, कहीं-कहीं मिलता है। ''जित्थे लेखा मंगिये तित्थे खड़े दिसन्न।'' गुरू का काम बड़ा ऊँचा है। कि सज्जन को मिला दो। मगर हमारे और उस (प्रभु) के दरम्यान मन खड़ा है। जब तक मन काबू न हो कैसे मिले ? हमारी

गति क्या हो रही है ? भोग इन्द्रियों को खींच रहे हैं बे-अख्त्यार। अच्छी सीनरी देख कर मन खिंच जाता है, अच्छा रूप देखकर खिंच जाता है, अच्छा राग सुनकर कान की इन्द्री खिंच जाती है। तो हरेक इन्द्री से ये मन खिंचा फिरता है। तो इन्द्रियों को भोग खींच रहे हैं , मन को इन्द्रियाँ खींच रही हैं और मन आत्मा पर सवार है। चाहिए तो ये था ना कि आत्मा के बल पर, हमारी सुरति(आत्मा) इनके साथ है ना (मन इन्द्रियों के) तभी ये काम करती हैं। इन्द्रियां भी तभी काम करती हैं जब हमारी सुरति इनके साथ हो। तो हम ही इनको ताकत देने वाले हैं और ये हम पर ही सवार हैं। कितनी बुरी गति है। शर्म है कि नहीं। तो कहते हैं, हमें वह उपदेश दो जिससे मन काबू में आ जाए, कहीं और न जाए। ऐसा रस दे दो। और वह रस किसमें है ? नाम में। नाम किसको कहते हैं ? परिपूर्ण परमात्मा को कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया। ये नाम पावर, Bread of life कहां मिलती है ? किसको मिलती है ? जिसको प्रभु दया करे। ''धुर कर्म पाया तुध जिनको से नाम हर के लागे।'' कि हे प्रभु, जिसको तू आप दया करे वह नाम के साथ लगते हैं। जब वह दया करे। ''करम होए सत्गुरू मिलाए।'' फिर ऐसी हस्ती (सत्स्वरूप हस्ती) को मिला देता है। वह (सत्गुरू) क्या करता है ? सेवा सुरत शब्द चित्त लाए।'' वह सुरति को परिपूर्ण परमात्मा से जोड़ देता है। कहते हैं ऐसा सज्जन कोई नज़र आ जाए तो उसको कहो, महाराज कृपा करो, प्रभु से मिला दो। मगर हमारे और उसके दरम्यान मन खड़ा है। जब तक कोई ऐसा उपदेश न दे। जिससे मन काबू में आए तो वह मिले कैसे ? महापुरुषों ने इकरार किया है कि परमात्मा है। कहां ? कि इस शरीर रुपी मंदिर में है। हम क्यों नहीं मिल सकते ? कि हमारे और उसके दरम्यान में मन खड़ा है। एक फकीर ने कहा -

दर तो दारी दर दिले खुद अज्मे रफ्तन सूए दोस्त।
यक कदम बर नफसे खुद नह दीगरे दर कूए दोस्त।

कि अगर तुम अपने दिल में प्रभु के पाने का पक्का इरादा रखते हो तो एक कदम अपने नफ्स (मन) पर रखो, मन को खड़ा करो। दूसरा कदम जो उठाओगे प्रभु की गली में पहुंच जाएगा। यही महापुरुष सब उपदेश देते हैं। कुरान शरीफ में आता है, ''अरबहू नफसहू अरबहू रबहू।'' कि जिसने अपने नफ्स (मन) पर काबू पा लिया, समझ लो उसने प्रभु को पा लिया। तो हमारे और उसके दरम्यान कौन खड़ा है ? इसी शरीर रूपी मन्दिर में है वह (परमात्मा)। हमारी आत्मा उसकी अंश है इसमें। सुरति कहते हैं। महान सुरति करोड़ो ब्रह्मण्ड बना सकता है, ''एको कदाओ तिसते

होय लख दरियाओ।'' क्या हम एक शहर नहीं बना सकते ? जिस्म की मशीनरी हमसे (देह के निवासी आत्मा से) चल रही है। सुरति ठिकाने न हो, कहीं और ख्याल लगा हो, खाने का रस भी नहीं आ सकता। तुम सुनते नहीं अगर तुम्हारा ध्यान कहीं और लगा पड़ा हो, आवाजें देते रहो। तो सुरति ही से ये मशीनरी चल रही है और सुरति ही खिंची फिर रही है। ये हमारी गति है। हम बड़े दुखी हैं। तो बड़े प्यार से कह रहे हैं कि महाराज, हमें सत्गुरू से मिलाओ। ऐसा कोई उपदेश दो जिससे मन खड़ा हो जाए। ये तभी होगा अगर ज्यादा रस मिल जाए, छोटे रस आप फीके पड़ जाएंगे। दो गिलास हों पानी के। एक में एक पाव मीठा पानी डाल दो, एक में एक तोला डाल दो। तोले वाला पहले मीठा मालूम होगा कुछ। पाव वाले को पियोगे तो पहला फीका मालूम होगा। तो नाम में महारस है। ''नाम मिले मन तृप्तिये।'' नाम के मिलने से मन तृप्त हो जाता है। ''विण नांवे धृग जीवास।'' अरे मानुष जन्म पाकर जिसको नाम की प्राप्ति नहीं हुई उसका जीवन बे-अर्थ चला गया। ये हमारा रोना है और रोने को दूर करने का ईलाज नाम है। मन खड़ा हो, पर कोई सिख हो जो ये जवाब दे सकता हो। ''बिन गुर पूरे कोई न पावे लख कोटि जे कर्म कमावे।'' पूर्ण पुरुष, जो Bread of life है, Water of life है, He is Word made flesh (वह शब्द सदेह है)। ''गुरु में आप समोए शबद वरताया।'' जिसमें वह नाम समा रहा है और दूसरों को परिपूर्ण परमात्मा से जोड़ सकता है, वही हमें ये चीज़ दे सकता है जिससे मन काबू आ जाए। अब तो ये (मन) अन्तर में नहीं जाता, बाहर से हटता नहीं। अगर इसको वह रस मिल जाए, फिर इसको खींचकर बाहर लाओगे तो नहीं आएगा। ऐसे महापुरुष का मिलना बड़े भागों से होता है। किसी खुश्बू बेचने वाले के पास तुम जाओ, खुश्बू मुफ्त मिलती है कि नहीं। वह तुमको शीशी भी (इत्र की) साथ दे दे तो ? ऐसे महापुरुष की radiation में (उसके शरीर से आत्मरंग की जो किरणें प्रसारित होती हैं), कोई यकसूई (एकाग्रता) से बैठे फिर भी काम बन जाए और कहीं बोल उठे तो ?

चेतन्य महाप्रभु का ज़िक्र है, बंगाल में महात्मा हुए हैं। हरके महात्मा का अपना-अपना बोला (सम्बोधन वाक्य) होता है। उनका बोला था, 'हरि बोल।' एक धोबी घाट पर चले गये। एक धोबी के पास खड़े होकर कहने लगे, हरि बोल, हरि बोल। उसने समझा कोई पैसा मांगने वाला आ गया है। चुप रहा। एक बार कहा, दो बार कहा। उस धोबी ने कहा, चलो पीछा छुड़ाओ। हरि बोल जो कहा, जो charging

थी (उन वचनों में), वह काम छोड़, हरि बोल, हरि बोल करने लग गया। साथ वाले भाई दौड़े आए, अरे भई क्या हो गया हैं तुमको ? कहता है, हरि बोल, हरि बोल। वह भी साथ में बोलने लगे, हरि बोल (charging के असर से) सारा धोबी घाट हरि बोल, हरि बोल, कहकर नाचने लग गया। बात समझे ? ऐसे महापुरुषों का मिलना बड़े भागों से होता है। कुछ न दें, खाली radiation में बैठो तो भी सुख। एक शीशी साथ में दे दें, अन्तर में contact थोड़ी पूंजी (सत की, नाम की) दे दें, उसको ये बढ़ा ले (रोज अभ्यास करके) दुनिया के रस फीके पड़ जाते हैं। बड़े प्यार से समझा रहे हैं। किसकी तारीफ है ? छोटा-से-छोटा सिख भी हो, सिख हो मगर, जो मन-इन्द्रियों का सिख नहीं हो, दुनिया का सिख नहीं हो, न इस दुनिया का न उस दुनिया का, गुरसिख हो। जी -

एह मन तैकूं देवसां मैं मारग दे बताए जियो ॥

कहते हैं अगर ये मन तेरे हवाले कर दूं। बस। ''एह मन तैकूं देवसां।'' क्या होगा उसके बाद ? कहते हैं मुझे वह मार्ग बता दे जो प्रभु सज्जन को जाता है। हमारे हजूर थे। सत्संग लगा था। यो फरमाने लगे, भई आज तुम मन दे दो, अभी जा सकते हो सीधे। मन कैसे दे सकता है, अपना ही न हो तो ? अभी तो उसके (मन के) हाथ बिक रहे हैं ना। जिस घोड़े पर सवार हो वह टपूसियां मारता हैं (अड़ी करता है) कहते हैं तुम्हारा घोड़ा है, ले लो। तुम ही नहीं संभाल सकते तो आगे क्या करेगा ? तो एक उठा (संगत में से) कि मैं देता हूं, मन। तो फरमाने लगे, भई पहले मन को तू अपना तो बना ले। दे वही जो अपना हो। मन के हाथों सब दुनिया रो रही है। इसका ईलाज सिवाय किसी महापुरुष के और किसी के पास नहीं, और वह जो ईलाज है, हमारे अन्तर ही में है। वह (सत्गुरु) नाम मुजस्म (सदेह) है, Word made flesh है, ''गुरु में आप समोये शब्द वरताया।'' वह थोड़ा contact पूंजी देता है, जीयादान देता है।

जीयादान दे भक्ति लायन हर सों लैण मिलाय जीयो ॥

ये चीज़ वह देता है। कितने लोग हैं दुनिया में जो प्रभु की प्रार्थना करते हैं, प्रभु को पाने के लिये। बहुत कम हैं। सिख भाइयों में अरदास है, ''गुरमुख का मेल, साध का संग, नाम का रंग, सेई प्यारेया मेल जिन्हां मिलेयां तेरा नाम चित्त आवे।'' और ''नानक दास एही सुख मांगे, मोको कर सन्तन की धूरे।'' ये रोज मांगते हैं। सन्त

मिल जाए तो कहते हैं हमें सन्त की ज़रूरत नहीं, हमें किसी की ज़रूरत नहीं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, प्रभु को पाना है मानुष जन्म पाकर। वह हमारे घट-घट में है। अब जब तक बाहरी रसों को छोड़े नहीं, मन-इन्द्रियों की खिंचावट से हटे नहीं— ये मन कैसे हटे बाहर से जब तक इसको ज्यादा रस न मिले ? ज्यादा रस कहां से मिलेगा ? नाम से। नाम का दाता कौन है ? कोई महापुरुष। उसको सच्चा बादशाह कहते हैं। सच की दौलत है वह (जो दौलत वह देता है)। That is the Bread of life, Water of life (वह ज़िन्दगी की रोटी है, ज़िन्दगी का पानी है)। ये उपदेश किन लोगों को है ? सारे जहान को एक जैसा है, किसी समाज में रहो। मानव को उपदेश है ना। जी।

हौं आया दूरों चल्ल के मैं तक्की तौ सरणाय जियो ॥

मुद्दतें हो गईं मुझे चलते-चलते। कई जूनों (योनियों) में गुज़रा। आख़िर मानुष देह पाई। ये चौरासी लाख जियाजून की सरदार जूनी है। ये एक ऐसा समय है (मानुष जन्म) कि अगर तुम एक कदम आगे उठाओ तो घर पहुंच जाओ, पीछे हटाओ तो वापस आ जाओ, चक्कर काटो। तो कहते हैं, मैं जन्मों-जन्मों से दूर पड़ा रहा, अब मैं तेरे पास आया हूँ। मैंने देखा कि तू दे सकता है। ''मै तक्की तो'' मैंने देखा है कि तू समर्थ है। अब इस चक्कर से निकाल। हमारे सिर पर जन्मों-जन्मों के कर्मों के बोझ लदे पड़े हैं, action reaction कहो। कुछ pay off हो जाते हैं (अर्थात उनका भुगतान हो जाता है) कुछ बाकी हैं जन्मों-जन्मों के कर्म। जब तक ये wind up न हों (चुकता न हों) काम कैसे बने ? धृतराष्ट्र से पूछा गया था, वे जन्म से अन्धे थे, कि किस जन्म में तुमने कोई ऐसा कर्म किया कि तुम अन्धे हो ? तो फरमाने लगे कि सौ जन्म की तो मुझे खबर है, मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया। भगवान कृष्ण जी योगीश्वर गति वाले थे, उन्होंने थोड़ी तवज्जो दी तो एक सौ छहवें (106) जन्म का फल भोगा जा रहा था। हमारी गति तो ये है कि जैसे एक गधा हो, बोझ से लदा पड़ा हो और कीचड़ में फंस रहा हो। जन्मों-जन्मों के कर्मों का बोझ सिर पर लदा पड़ा है और मन-इन्द्रियों के कीचड़ में फंस रहा है। किसी को रहम (दया) आ जाए उसकी हालत को देखकर—और किसको रहम आता है ? किसी महापुरुष को। अपने आराम के दिन छोड़ता है, बुरा भला भी कहता है। कहता है कोई जीव निकल जाए। वह क्या करेगा जिसमें बैठ जाएगा ? पहले उसके बोझ को ज़रा हल्का करेगा, फिर खींचकर निकालेगा। ''खैंचे सुरति गुरू बलवान।'' मन-

इन्द्रियों के घाट पर कीचड़ में हम फंसे पड़े हैं। कोई खींचने वाला निकले। मन-इन्द्रियों के घाअ पर जो फंसा पड़ा है, कर्म वो करता है जो इन्द्रियों के घाट के हैं - अपराविद्या के जितने साधन हैं जप करना, तप करना, पूजा करना, पाठ करना, हवन करना, दान करना, पढ़ना-पढ़ाना, गाना-बजाना, इन सब का ताल्लुक मन और इन्द्रियों के घाट से है। आगे इसमें फंस रहे थे, ये कर्म करते हुए कैसे निकल सकते हैं ? इसमें हौमे का, कर्ता होने का ख्याल है, इसलिये चक्कर काटता रहेगा। अब इसका ईलाज क्या है ?

हौमे ममता सबद जलाई, गुरमुख जोत निरन्तर पाई ॥

गुरुमुख बनकर अगर अन्तर में ज्योति का विकास कर ले—परमात्मा ज्योति स्वरूप है, तो उसको देख करके कि वह करनेहार है (परमात्मा) हम नहीं, हौमे (अहंभावना) नहीं रहती। पहली चीज़। तो हमारे सिर पर जन्मों-जन्मों के कर्मों के बोझ लदे पड़े हैं, किसी को रहम आए, थोड़ा, बोझ हमारा हल्का करे, फिर खींच कर इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाये, अन्तर में थोड़ा प्रकाश दे, श्रुति का थोड़ा अनुभव दे, जो Bread of life (ज़िन्दगी की रोटी या आत्मा का आहार) है, तुमको कहां पहुंचायेगी ? जहां से उसका निकास है (जहां से वह आ रही है ज्योति और श्रुति की धारा)। परमात्मा ने जब चाहा मैं एक से अनेक हो जाऊं तो थर्राहट हुई, और उसका result नतीजा, क्या हुआ ? Light and Sound (ज्योति और श्रुति)। परमात्मा ज्योति स्वरूप है और परमात्मा नाद हो रहा है। किसी महापुरुष का काम है, उसमें वह समा रहा हैं (नाम) वह Word made flesh (शब्द या नाम सदेह) है। वह इसको अपना जीयादान देते है, उससे (नाम से) जोड़ देता है। कितनी भारी दात है ? ''सत्गुर बाझों होर न दाता बिया।'' ये दान जो गुरु देता है, कोई दुनिया में और नहीं दे सकता। ये वही दे सकता है जो उसका (सत् का) स्वरुप हो। बात समझे ? ये शब्द कई बार पढ़ा होगा। हम पढ़ छोड़ते हैं खाली।

कहते हैं अब मैं आपकी शरण में आ गया हूँ। मेरा बेड़ा पार करो। मुझे प्रभु से मिला दो। मन के हाथों रो रहा हूं। उससे छुड़ा दो। शरण आना कुछ और है। हुक्म मानना भी शरण में आना नहीं। शरण है, जो हवाले कर दे, जैसा तू करे ठीक है। कोई चूं चरां का सवाल ही नहीं। ''सुपुर्दम बतो मायए ख़ेश रा, तो दानी हिसाबे कमोबेश रा।'' कि मैंने सब कुछ तेरे हवाले कर दिया, तू जान तेरा काम। हज़रत इब्राहीम थे। एक गुलाम खरीद लाए। घर में आकर उससे पूछने लगे, कहां बैठोगे ?

कहने लगा महाराज, सवाल क्या है, मैं तो खरीदा गया, जहां बिठाओगे। क्या खाओगे ? फिर वही जवाब, खरीदा जो गया फिर खाने का क्या है ? जो दोगे। क्या पहनोगे ? कि महाराज जो दोगे। मैं खरीदा जो गया। तो ''बय-खरीद लाला गोला'' बने, इसको कहते हैं शरण आना। शरण लेनी बड़ी मुश्किल है। हमको सौ अभाव आते हैं गुरू पर। सौ तरह की बातें हैं, यह खाता है, पीता भी है, ये यह करता है ये वह करता है। अरे, महापुरुष का जीवन दो तरह से है। एक as son of man (मानव होने के नाते) भ्रातृभाव बरतता है, किसी का बुरा चितवन नहीं करता। इन्सानों की तरह बरतता है और उनसे सुख-दुख बांटता भी है। किसे कोई दुख आ जाए तो उससे हमदर्दी भी करता है। बाज़ दफ़ा आंसू भी बहाता है माफ़ करना। अगर जब उस (अवस्था) में आता है, सब ने जाना है, चल। लोग जो इन बातों में, देखने में, रह जाते हैं, वह घाटे में रहते हैं। तो कहते हैं शरण में जाओ। ''मैं तक्की तो सरमाये।'' मैंने देखा तेरी शरण में आया तो ये काम हो सकता है। एक आदमी के चार लड़के हों। एक दो मांग लेते हैं। एक बच्चा कुछ नहीं माँगता। जो दे देता है पिता, ठीक। तो पिता क्या करता है ? क्या उसका उस तरफ ख्याल नहीं ? उस तरफ ज्यादा ख्याल रहता है। वह अव्वल चाहता नहीं कुछ (वह लड़का), अगर चाहे भी, चाहने से पहले उसका हिस्सा रखता है। सारे बच्चे उसको प्यारे हैं ना। तो शरण लेने का ये मतलब है। ये दौलत मिलती कब है ? गुरु रामदास जी ने कहा कि मेरा गुरु बड़ा भारी रंगरेज़ है, बड़ा बर्तन भरा पड़ा है रंग से। जो भी मन दे रंगा जाएगा। मन देना ? मन कहां देता है। हम सब कुछ देते हैं मन नहीं देते। मन दो तो काम बन जाए। जी।

मैं आसा रखी चित्त में मेरा सब दुख गंवाए जियो।

कहते हैं मैं दिल में बड़ी आस धारण करके आया हूं, मेरे सब दुखों का नाश कर दो। मैं यही मांगता हूँ। ''सरब रोग को औखद नाम।'' मैं देखकर तुझको समर्थ, तेरे हवाले होता हूं, मेरे सब दुखों को दूर करो।

इत मारग चल्ले भाइड़े गुरु कहे सो कार कमाये जियो ॥

देखिये कितना प्यार है। भाई समझते हैं भाई। इस मार्ग के चलने के लिए ऐ भाई, भाइड़े, क्या करो ? जो गुरु कहे वह कहना मानो। बस। तुम मेरे भाई लगते हो। वह नहीं कहते मैं खुदा हूं। तुम मेरे भाई हो, जो गुरु कहे उस पर कारबंद रहो। If you

love me keep my commandments (अगर मुझसे प्यार है तो मेरा कहना मानो)। उसके बचनों पर मत्था टेको। ''सत्गुर बचन बचन है सत्गुर।'' जो बचनों पर मत्था टेकता है उसकी अवश्य कल्याण है। महीनों, दिनों में बेड़ा पार हो जाता है। हम मत्था नहीं टेकते। किस पर ? वचनों पर। बाहर तो बहुतेरे मत्थे टेकते हैं, मगर कहना नहीं मानते। यही कमी है। आज कहना मान लो आज से लो (उन्नति)।

जब से दर्शन भेटे साधु भले दिवस हो आए।

कि जब से साधु के दर्शन से भेंट हुई, उस दिन से अच्छे दिन आने शुरु हो गये। उस दिन से भेंटना शुरु हुआ। भेटना किस को कहते हैं ? एक होता है मिलना, एक होता है भेटना, पंजाबी लफ्ज है। मिलना तो साधारण मिलना होता है। एक दिल दिल को राह बनना है, लेवी-देवी होती है। ''सन्तन संग हमरी लेवा-देवी सन्तन संग ब्योहारा।'' भेटने से, दिल-दिल को राह बनने से, उस दिन से उसके दिन अच्छे आने शुरु हो गये। जब दिल-दिल को राह बना तो कहना मानोगे कि नहीं ? बल्कि यहां तक महापुरुषों ने बयान किया है, ''दर्शन भेटत पाप सब नासें।'' सब पापों का नाश होता है, भेंटने से। दर्शन करने से नहीं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ए भाई, पहली बात, भाइयडे, गुरू जो कहे सो करो। वह क्या कहता है ? भई ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है। मानुष देह बड़े भागों से मिलती है। It is thy turn to meet God. प्रभु को पाने का यही वक्त है (मानुष जीवन का समय जो मिलता है)। अगर, प्रभु जिसके अन्तर में प्रगट है वह मिल जाए, उससे कहो महाराज, मेरा दुख दूर करो। अगर वह कहे, हम उसका कहना ही न मानें तो ?

एक स्कूल हो। लड़के उसमें हैं कई। उस्ताद पढ़ाता है। एक लड़का एक दिन सबक ले कर फिर याद करके आता है फिर दूसरे दिन आगे चलता है। एक लड़के को बार-बार कहो, वहीं फिर, फिर मुड़ कर वहीं। ऐसा लड़का कब पास होगा।

सत्गुरु मिलेया तब जाणिए जब मिटे मोह तन ताप ॥

पिंड से ऊपर आए तब। पहले स्थूल देह से ऊपर आ कर उसका मोह उतरे, फिर सूम्क्ष, फिर कारण का। सत्गुरू के मिलने का ये फल है। उस के लिए सिर्फ एक शर्त है—कहना मानो। आपको डायरियां रखने की ताकीद की जाती है हर एक को।

कितने डायरी रखते हैं ? शायद पांच फीसदी हों। जो रखते हैं वह तरक्की कर रहे हैं। वह (महापुरुष) साथ ही ये भी कहता है, रोज़ पिंड को छोड़ो, रोज़ के रोज़ नाम के रस को लो। जो सिख है उसका क्या काम है ? वह अभी पेश किया जाएगा। तो कहना मानो भई। गुरू मिला है तो उसका कहना मानो। वह क्या कहता है ? वह आगे आ जाएगा शब्द। वह कहता है प्रभु से जुड़। मानुष देह भागों से मिलती है। ये पौड़ी हाथ से निकल गई फिर या नसीब कब ये समय मिले मनुष्य जीवन का और फिर तुम ये काम कर सको। एक-एक स्वास तीन लोक का मोल, कबीर साहब फरमाते हैं, जिसको हम कितनी बेदर्दी से गवा रहे है। जी। आगे पढ़ो।

त्यागे मन की मत्तड़ी विसारे दूजा भाओ जियो ॥

वह (गुरु) क्या कहता है ? मन का कहना छोड़ दो और जो गुरू कहे करो। पहली बात। ''त्यागे मन की मत्तड़ी,'' और द्वैत भाव, ये भी छोड़ दो। सब के अन्तर परमात्मा है। सब के अन्तर आत्मा उसकी अंश है We are all brothers and sister in God (हम सब आपस में भाई-भाई और बहन-भाई हैं)। ये शरीर हरि-मन्दिर है। ये द्वैत भाव छोड़ दो। भगवान कृष्ण जी ने फरमाया, ''जो मुझ में सब को देखता है और सब में मुझ को देखता है वह मेरा प्यारा है।'' ये दो चीज़े रखीं। आपको पता है आपकी डायरीं में एक कालम है इसके लिए humility (नम्रता, विनीत भाव)। बाज़ वक्त, मैं अमीर हूं। अनपढ़ों से नफ़रत करता है। फिर मेरे पास हकूमत है - सब को नफ़रत करता है। भई है तो सब के अन्तर परमात्मा की अंश और सब के अन्तर परमात्मा बैठा है, फिर नफ़रत काहे की। एक खड़ा है, एक कुर्सी पर बैठा है। फ़र्क़ कर्मों का है ना, है तो एक जैसा सामान सब में, सब के अन्तर आत्मा, उस प्रभु की अंश है। सब के अन्तर प्रभु आप बैठा है। इसलिए द्वैत भाव छोड़ो भाई और मन का कहना मत मानो। वह यही कहता है ना भई। और क्या कहता है ? जी।

क्यों पावे दरसावड़ा न लग्गे तत्ती वाओ जियो ॥

कहते हैं, फिर तुम हरि के दर्शन को पा जाओगे। गर्म हवा तुमको नहीं लगेगी। नशेब-फ़राज़ (उतार-चढ़ाव) आएंगे दुनिया में मगर तुमको pinch नहीं करेंगे (उसकी चुभन तुम्हें महसूस नहीं होगी)। हमारे हज़ूर (श्री हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) फ़रमाया करते थे कि काँटे बिछे पड़े हैं, इस दुनिया में। सब काँटे तो

दूर नहीं हो सकते। पांव में मजबूत बूट पहन लो, चुभें नहीं। मजबूत बूट पहनना क्या है ? अन्तरात्मा को प्रभु से जोड़ो। बाहर नफ़रत जो है, ये सबसे बड़ा गुनाह है दुनिया में। जिसको पाना चाहते हो वही घट-घट में बैठा है। उससे नफ़रत करते हो। फिर ? वह कैसे मिलेगा ? ''जे तोय पिया मिलन दी सिक्क तां हिया न ठाहीं किनी दा।'' बड़ी साफ़ बात है। जी।

हौं आपू बोल न जाणदा मैं कहेया सब बकुमाओ जियो ॥

अब गुरु अर्जन साहब फरमाते हैं, ये जो कुछ मैंने कहा है, ये मैंने नहीं कहा, ये प्रभु ने मुझ से कहाया है। ये जो कुछ मैं कह रहा हूँ कि द्वैत के आलम को छोड़ो, गुरु का कहना मानो, मन का कहना नहीं मानो, ये मैं नहीं कह रहा, मुझे कहाया जा रहा है। और इससे ज्यादा क्या कहें। इकरार कर रहे हैं। ये (महापुरुष) Conscious Coworker of the Divine plan (प्रभु में अभेद) होते हैं। वह कहता है, वह (प्रभु) कर रहा है, मैं नहीं कर रहा। मुझसे वह कहा रहा है जिससे जीवों की कल्याण हो सके। जी।

हर भक्ति खजाना बख्शेया, गुरु नानक किया पसाओ जियो ॥

कहते हैं ये भक्ति का खज़ाना प्रभु ने बख्शा है। गुरु ने क्या किया ? कहते हैं, out of Compassion, तुठ कर, पंजाबी लफ्ज़ है जिसके माने हैं out of Compassion (दया करके) ये दौलत बाँटी है, लो गई, और वह (जिन को ये दौलत बांटी) समझे नहीं अभी। जी।

मैं बहुड़ न तृसणा भुक्खड़ी, हौं रज्जां तृपत अघाय जियो ॥

कहते हैं वो ली मैंने (दौलत)। खूब खाया, रज्जआ (पेट भर) गया। अब मुझे कोई तृष्णा तंग नहीं करती। एक ऐसी चीज़ मुझे दो जिसके खाने से सब भूखें खत्म हो गई, सब प्यासें खत्म हो गई। सो आत्मा की खुराक परमात्मा से जुड़ना है, नाम से जुड़ना है। अन्तर ज्योति का विकास, नाद का अनुभव करना है। That is the Bread of life, the Water of life. (वह ज़िन्दगी की रोटी है, ज़िन्दगी का पानी है)। जी।

जो गुरु दीसे सिखड़ा तिस निव निव लागां पाय जियो ॥

कि जो छोटे से छोटा सिख मिल जाए, बार-बार कुरबान जाऊं उस पर। अब

सिख का प्रोग्राम क्या होना चाहिए ? उनकी वाणी उन ही से सुनिये, वह क्या कहते हैं ? तो हमारे सब दुखों का ईलाज नाम है। कहां से मिलता है ? किसी साधु से मिलता है, अनुभवी पुरुष से। अगर वह मिल जाए, उससे कहो, महाराज हम बड़े दुखी हैं। कृपा करो, प्रभु से मिला दो। हमारे और उसके दरम्यान मन खड़ा है। ऐसा कोई आहार दो जिससे ये तृप्त हो जाए। कहते हैं ये दौलत कैसे भेजी प्रभु ने ? प्रभु ने ये खज़ाना अनुभवी पुरुषों को बख्शा है, out of Compassion, तुठ कर, हम पर रहम करके, लो भई। लेने वाला कोई नहीं। कहते हैं मुझे मिल गई चीज़, मैं तृप्त हो गया। अब छोटा सा एक शब्द है कि सिख का क्या प्रोग्राम होना चाहिए। जी।

गुर सत्गुर का जो सिख अखाय।
सो भलके उठ हरि नाम धियाए ॥

वह एक सिख था ना, आधे सिख का ज़िक्र किया है। पूरे सिख का ज़िक्र कर रहे हैं। गुरु रामदास जी की वाणी है ये। सत्गुरू जो सत् का स्वरूप है, उसका सिख जो कहलाता है, ''गुरु सत्गुर का जो सिख अखाये। सो भलके उठ हर नाम धियाए।'' वह सुबह उठकर नाम का ध्याने वाला बने। नाम का ध्याना किस को कहते हैं ? नाम, मैंने अभी अर्ज़ किया, परिपूर्ण परमात्मा इज़हार (अभिव्यक्ति) में आकर जो खण्डों-ब्रह्मण्डों को लिये खड़ी है ताकत, उसको नाम कहते हैं। उसको शब्द कहते हैं। उसको सत् कहते हैं। नाम का ध्याना क्या है ? उसमें (नाम में) ज्योति का विकास है, उसमें अखण्ड कीतर्न हो रहा है। आत्मा के उससे जुड़ने का नाम ध्याना है। कहते हैं सुबह उठ कर तीन और पांच और छह बजे के दरम्यान उठ कर नहा धो कर, जैसे तबीयत माने, उस परिपूर्ण परमात्मा से लगे - ये है नाम का धियाना।

जिन्नी नाम धियाइया गये मुसक्कत घाल।
नानक से मुख उझले केती छुट्टी नाल ॥

जिन्होंने नाम को ध्याया उनकी सारी मुशक्कतें (मेहनतें) सफल हो गई। उनके अपने मुख मालिक की दरगाह में उजले हो गये और उनके साथ अनेकों जीवों का उद्धार हो गया। फिर क्या कहते हैं ?

गुरमुख कोटि उद्धारदा दे नांवे इक कणी।

कि थोड़ी सी नाम की कणी देकर लाखों जीवों का उद्धार कर सकता है। गुरुमुख

बड़ी चीज़ है। कहते हैं, सिख का प्रोग्राम क्या हुआ ? हर रोज़ सुबह उठे। भलके का टाइम, Small hours of the morning तीन और पांच छह बजे के दरम्यान नहा कर, मुंह-हाथ धोकर जैसे तबीयत माने, चेतन्य होकर, बैठो और परिपूर्ण परिमात्मा (नाम या शब्द) जिसकी दात, पूंजी मिली है गुरु से, उसके साथ आत्मा को जोड़े, बाहर से हट-हटाकर। इस आत्मा में -

जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे जो खोजे सो पावे।

ब्रह्मण्ड में तीन खण्ड हैं, स्थूल, सुक्ष्म और कारण, Physical, Astral and Causal. जो इन गिलाफों (आवरणों) को उतार कर, कहां तक जाए ? ब्रह्मण्ड से पार जाए। नाम के साथ लगकर पिंड (स्थूल देह) से ऊपर आए, अंड से ऊपर आए, ब्रह्मण्ड से ऊपर आए। कहां तक रसाई करे कम से कम ? आगे बतायेंगे। कहते हैं जो भी कोई अपने आप को गुरु सता का सिख कहलवाता है, सुबह उठ कर नाम को धियाये। पहली बात। कहां तक जाए ? आगे बतायेंगे। जी।

उधम करे भलके परभाती अस्नान करे अमृतसर न्हाये ॥
झालांगे उठ नाम जप निस आसर आराध ॥
कारा तुधे न व्यापई नानक मिटे उपाध ॥

सुबह का वक्त, कहते हैं, कहाँ तक जाओ ? कहते हैं अमृतसर में स्नान करो। ये गुरू रामदास साहब की वाणी है। बाहर का श्री अमृतसर साहब गुरू अर्जन साहब ने मुकम्मल (पूरा) किया। गुरू रामदास जी ने शुरू किया, मुकम्मल हुआ गुरू अर्जन साहब के वक्त। कहते हैं वह अन्तर का अमृतसर है। गुरू अमरदास जी साहब की वाणी में आता है -

साचा अमृतसर काया माहिं, मन पिये पाए सुभाई हो ॥

कि सच्चा अमृतसर इन्सान के अपने अन्तर में है। जो भी कोई भाव-भक्ति से उसको पा जाये, स्नान करे। तो पिंड से ऊपर आए, अंड से ऊपर आए, ब्रह्मंड से ऊपर आ कर, जिसको दस्म द्वार कहते हैं, जिसको हौज़े कौसर कहते हैं, जिसको प्रागराज कहते हैं, वहां स्नान करें। इस आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण के गिलाफ (आवरण) उतरें, यहां तक जाए। सिख का प्रोग्राम बता रहे हैं। फिर उसके बाद क्या

करें ? हम पिंड से ऊपर नहीं आते, अंड ब्रह्मंड के पार जाए कौन ? वह स्नान करे (अमृतसर में)। जी।

उपदेश गुरू हर हर जप जापे
सब किलविख पाप दुख लह जाए ॥

कि सारे दुख, अधिभौतक है, अधिदेविक हैं और आध्यात्मिक जो हैं, सारे दुखों का नाश हो जाता है। किस को ? जो गुरू से उपदेश लिया है वह। उसके नाम की कमाई करो। पिंड, अंड, ब्रह्मण्ड के पार जाए, अमृतसर में स्नान करें। उसके बाद क्या करें ?

फिर चढ़े दिवस गुरू बाणी गाए।
बैहंदेयां उट्ठदेयां हर नाम ध्याए ॥

उसके बाद गुरूबाणी का उच्चारण करे। गुरूबाणी ? ये महापुरुषों की बाणी। इसका सुबह उठकर पाठ करे। ये माता की गोदी है। इसमें उभार मिलेगा। इससे होश आती है कि बड़ी नेहमत (अनमोल) चीज़ तुम्हारे अन्तर में रखी है। रोटी का ज़िक्र है ना, कैसे मिलती है, किस को मिलती है, क्या उभार मिलता है ? तो हर लफ्ज़ो में आप को अर्ज़ किया जाता है, नाम ध्याने के बाद किसी महापुरुष की वाणी पढ़ लो। वाणी पढ़ना वगैरह दिवस चढ़े लिखा है, नाम का ध्याना पहले लिखा है। अब आप समझे ? नाम के ध्याने में और वाणी के पढ़ने में कुछ फर्क है। वाणी में तो उस नाम का ज़िक्र है, आत्मा के उस परिपूर्ण नाम से लगकर, ज्योति स्वरूप को पा कर कैसे पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड के पार जाए, इन बातों का ज़िक्र है। वह चौथा लोक, सत्लोक, सचखण्ड पहुंचना, इस बात का ज़िक्र है। वह पढ़ो। रोज़ सबक ताज़ा हो कहां पहुंचना है। तो ''दिवस चढ़े गुरबाणी गाये।'' हम नाम का ध्याना भूल गये, खाली बाणी पढ़ते रहे। खैर न करने से अच्छा है। मगर नाम के ध्याने का ज़िक्र आता है (वाणी में) कि वो तुम्हारे अन्तर में प्रगट है, वह तुम्हें उससे जोड़ सकता है। ''कोई जन हर स्यों देवे जोड़।'' उस की कमाई करो और पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड के पार जाओ, कम से कम अमृतसर में स्नान करो और दिवस चढ़े फिर गुरबाणी गाओ। उस नाम में रसा हुआ जो बाणी पढ़ेगा उस में असर होगा कि नहीं ? दूसरों पर भी असर होगा। ''साध संग हर कीर्तन गाइये।'' हरि का कीर्तन साधु के संग में गाओ। बाहर paid (वैतनिक) प्रचारक जो गाना गाते हैं वह और चीज़ है। साधु की

सोहबत में जो हरि कीर्तन है :-

अखण्ड कीर्तन तिन भोजन चूरा ॥
कहू नानक जाके सत्गुरू पूरा ॥

अखण्ड कीर्तन करो। किस को नसीब होता है ? जिस को पूरा गुरू मिले। चौबीस घण्टे वह Music of the Spheres (मण्डलों का राग) हो रहा है। बैठते - उठते सुरति को कण्ट्रोल में (बांधे) रखो। बस। ''बैठदेयां उठदेयां हर नाम धियाओ।'' जी।

जो सास ग्रास धियाये मेरा हर हर
सो गुरसिख गुरू मन भावे ॥

कहते हैं स्वास स्वास जो ध्याता है उस नाम को, कहते हैं वह उसको, गुरू को, प्यारा है। गुरू को कौन प्यारा है ? जो उसकी शिक्षा को, तालीम को, धारण करता है। वही प्यारा हो सकता है। हम सब ज्योति के पुजारी हैं। ''जागत जोत जपे निस बासर।'' हम जागती ज्योति के पुजारी हैं। जो ज्योति को प्रगट कर ले वह खालसा बन जाता है।

पूर्ण जोत जगे घट में तब खलस ताहिं नख़ालस जानो।

उसकी (खालसा की) फिर तारीफ की है :-

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसा में हौं करूं निवास।
खालसा मेरो सज्जन सूरा।
खालस मेरो सत्गुरू पूरा।
या मे रंच न मिथ्या भाखी।
पारबह्म गुरू नानक साखी।

कि सच कह रहा हूं मैं। वह गुरू को प्यारा होगा। क्यों साहब ? जो गुरू पढ़ाता है, वह करो, रोज़ पिण्ड से ऊपर आओ। बल्कि वह बच्चा जो कहे, कभी ना नहीं करता (पिता)। प्यारा हो गया है ना। अव्वल मांगता ही कुछ नहीं (वह बच्चा) मांगेगा क्यों ? उसको तो गुरू की रज़ा (इच्छा) पर रहना सब से बड़ा धर्म है। आप भाई चाहते हैं गुरू को भा जाएं ? ये दो काम हैं (जो हमें करने है इसके लिये) हम

कहते हैं वक्त ही कोई नहीं, डायरी कौन रखे। उसका नतीजा यह है कि देर कर रहे हैं। याद रखो अगर ऐसा गुरू मिल जाए :-

सत्गुर मिलेया तब जानिये जब मिटे मोह तन ताप ॥

ये तारीफ है। उस दिन से उसके दिन अच्छे आने शुरू हो जाते हैं, खाली आने से (महापुरुष के सत्संग में), हाथ हिलाने से नहीं, नाचने-टापने से नहीं। जो वचनों पर मत्था टेकता है, जो उसके (गुरू के) सामने सच्चा है। वह तुम्हारे अन्तर में है। हम उसको धोखा देते हैं पहले, दूसरों को धोखा देने की बजाय। फिर छिपाते हैं। कहते हैं गुरू और वैद्य से कुछ नहीं छिपाना चाहिये। ये पंजाबी मिसाल है। उसको भी झूठ बोलते हैं। क्या होगा ? कम से कम जन्म-मरण खत्म नहीं होगा। आना-जाना बना रहेगा। जी।

जिसनूं दयाल होवे मेरा स्वामी तिस गुरसिख गुरू उपदेश सुणावे।

ऐसा गुरू किस को उपदेश देता है ? जिसको मालिक दया करे। जिस पर वह (मालिक) दयाल हो वह गुरू से ऐसे सिख को उपदेश दिलवाता है यानी वह भेजता है, वही देता है उसमें प्रगट होकर। जी।

जन नानक धूड़ मंगे तिस गुरसिख की जो आप जपे अवरां नाम जपावे ॥

कहते हैं ऐसे गुरसिख के चरणों की मैं धूड़ी (धूल) मांगता हूं जो आप जपता है और दूसरों को जपाता है (नाम)। बस। जिसके अन्तर में ऐसी बरकत आ जाए उस को समझना चाहिये ये उसकी दात(देन) है, प्रभु ने दी है, गुरू की बख्शिश (कृपा) है। उसकी अमानत समझे। हम गुरू का मुकाबला करने लग जाते हैं। क्या मिलेगा उसको ? (ऐसे गुरूद्रोही को)।

तो ये दो शब्द आपके सामने रखे गये। गुरसिख किस को कहते हैं ? गुरमुख किस को कहते हैं ? खालसा किस को कहते हैं ? उससे क्या मांगना चाहिये ? हम सब दुखी हैं, मन-इन्द्रियों के घाट पर, मन-बुद्धि के घाट पर। हे प्रभु हमें मन करके - मन को तृप्त कर दो। वह दवा दो, उपदेश दो जिससे ये (मन) तृप्त हो जाए। वह नाम है। सबके घट-घट में है। वही दे सकता है जिसके पास वह सच की दौलत है। वह सच्चा पातशाह है ना। उसका कहना मानो। पहली बात। वह क्या कहता है ? सुबह उठो। नाम के साथ लगो। पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड के पार जाओ। फिर दिवस चढ़े

गुरबाणी गाओ। हर वक्त वह धुनि (नाद की ध्वनि) जारी रहे। चौबीस घण्टे का नशा बना रहे।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात ॥

यह है वह नशा (नाम का)। महापुरुष बड़ा खोल-खोल कर बयान करते हैं। एक सत्संग काफी है। उसको जीवन में धारण कर लो। बेड़ा पार है। किसी समाज में भी तुम रहो।

खत्री, ब्रह्मण, शूद, वैश उपदेश चहुं वरणों को सांझा ॥

सब को एक जैसा उपदेश है। ये तो कर्मों के लिहाज़ से है ना, खत्री ब्रह्मण, है तो इंसान, आत्मा देहधारी है। चेतन स्वरूप है। सबके अन्तर में वह (परमात्मा) आप बैठा है। यह शरीर हरि मन्दिर है जिस में सच्चे की ज्योति जगमगा रही है।

ये गुरू साहिबों की वाणी है। आप के सामने रखी गई। किसी समाज में रहो। सब में (सब समाजों में) यही तालीम है। सिर्फ ज़बानदानी का फर्क है। आज से गुरसिख कहलवाने के worthy (योग्य) बन जाओ। कब बनोगे ? जब इस पर अमल करोगे। नहीं करोगे, करना पड़ेगा। एक जन्म में करो, दो जन्म में करो। अरे भई बार-बार आने जाने में क्या पड़ा है। अभी क्यों न कर लो। जो अब करता है, तब भी करता है। जो अब नहीं करता, तब भी नहीं करता।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे, एहला जनम गवाया ॥

अर्थात एक बार मनुष्य जीवन की ये पौड़ी, ये सबसे ऊंची सीढ़ी मानव जीवन की हाथ से निकल गई फिर जाने कब ये मौका नसीब हो और तुम ये काम कर सको।

✧ ✦ ✧